

भारत नेपाल सुरक्षा सम्बन्ध

बीज शब्द :

बफर स्टेट, सीमा पर सुरक्षा, सिविकम का भारत में विलय, भारत नेपाल सन्धियों, HIT फार्मूले

पृथ्वी के धरातल पर नेपाल का अक्षांशीय विस्तार 260° से 310° उत्तर तक और देशान्त्रीय विस्तार 800-890 पूर्व तक फैला हुआ है। संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्र नेपाल का कुल क्षेत्रफल 147.18 वर्ग किमी⁰ अर्थात् लगभग 56827 वर्ग मील में फैला हुआ, दक्षिण एशिया का यह देश अपने गौरवमयी इतिहास के लिए जाना जाता है। 2011 के जनगणना के अनुसार, नेपाल की कुल आबादी 26,494,504 है। यह विश्व का भौगोलिक दृष्टि से 93 वाँ राष्ट्र है। हिमालय पर्वत पर स्थित इस राष्ट्र की उत्तरी सीमा चीन तथा दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में भारत से मिलती है। हिमालय पर्वत पर बसा हुआ यह छोटा सा राष्ट्र पहले भारत और तिब्बत के बीच में था, लेकिन अब भारत और चीन के बीच एक बफर स्टेट का कार्य करता है। अभी तक नेपाल विश्व का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र रहा है। इसकी स्थापना शाह शासक, आधुनिक नेपाल के निर्माता पृथ्वीनारायण शाह ने 1769 में की थी। पृथ्वी नारायणशाह को नेपाल की विदेश नीति का शिल्पकार भी माना जाता है। उन्होंने नेपाल की विदेश नीति का निर्धारण करते हुए कहा था- “यह देश दो चट्टानों के मध्य खिले हुए फूल के समान हैं। हमें चीनी सम्राट के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखने चाहिए तथा हमारे सम्बन्ध दक्षिण सागरों के सम्राट से भी मधुर होने चाहिए, पर वे बहुत चालाक हैं।” अपने दो पड़ोसियों में से वह भारत को खतरे का अधिक बड़ा स्रोत मानता था। पिछले 245 वर्षों के इतिहास में नेपाल की विदेश नीति की प्रधान विशेषता यह रही है कि दोनों पड़ोसियों में से जो ज्यादा बलवान हो उसे खुश रखो।

भारत के उत्तर में स्थित पर्वतीय राज्यों से लेकर पूर्वोत्तर के राज्यों तक स्पर्ष करता राष्ट्र, नेपाल, सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। चीन द्वारा तिब्बत पर अधिकार कर लेने के बाद हमारे लिए इस सीमा की सुरक्षा एक चुनौतीपूर्ण कार्य बना हुआ है। आज भी हमारी नेपाल सीमा पर सुरक्षा, नेपाल की सुरक्षा पर निर्भर है।

भारत और नेपाल का इतिहास, भौगोलिक स्थिति, धर्म, विश्वास, भाषा एवं संस्कृति, सांस्कृतिक धरोहर एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। दोनों ही देश एक दूसरे से हिमालय की पौराणिक कथाओं से जुड़े हुए हैं और दोनों ऊँची पर्वतमालाओं का श्रद्धापूर्वक आदर करते हैं।¹ भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत-नेपाल मित्रता पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि “विश्व का कोई भी देश इतने निकट नहीं हो सकते जितने भारत और नेपाल हैं। इतिहास ने, संस्कृति ने, धर्म

भारत-नेपाल संबंधों के प्रमुख कारकों में एक है भारत-नेपाल सुरक्षा। भारत और चीन के बीच स्थित नेपाल एक बफर स्टेट है। नेपाल की भौगोलिक स्थिति भारत की सुरक्षा के लिए आश्वस्तिदायक है। भारत की अपने उत्तर स्थित पड़ोसी देश चीन से बढ़ते खतरे के कारण नेपाल सीमा की संवेदनशीलता बढ़ जाती है। यह शोध आलेख भारत-नेपाल के सुरक्षा संबंधों के विविध पक्ष पर प्रकाश डालता है।

अमित कुमार शुक्ल

शोध अध्येता

मेजर कृष्णानन्द पाण्डेय

एसोसिएट प्रोफेसर,

रक्षा एवं स्रुतेजिक अध्ययन विभाग,

लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गोण्डा।

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध
संयोजन

ने, नदियों ने हमें एक सूत्र में बाँधा है।”³

सन् 1769 से पूर्व नेपाल एक सम्प्रभु राष्ट्र नहीं था। यहाँ पर एक व्यवस्थित तंत्र की स्थापना का श्रेय पृथ्वी नारायण शाह को ही जाता है। दूसरी महत्वपूर्ण घटना सन् 1846 में घटित हुई, जब राजा जंग बहादुर ने सत्ता हथिया कर राजा को नाममात्र का शासक बना दिया। राजवंश ही सन् 1951 तक वास्तविक शासक रहे। राणाशाही के काल में भारत और नेपाल में अच्छी मैत्री रही। गोरखा नरेश पृथ्वीनारायण शाह नेपाल को सभी जातियों की फुलवारी बताकर भारत को विशेष कहते थे।

भारत नेपाल सम्बन्ध की अत्यधिक स्त्रातजिक महत्ता होने के कारण भारत कभी भी नेपाल की अवहेलना नहीं कर सकता। 1949 में जब साम्यवाद का तिब्बत पर प्रभाव बढ़ गया तब भारत की सुरक्षा चिन्ता भी बढ़ गई। अमेरिका भी इसी कारण नेपाल की राजनीति में गहरी रूचि लेने लगा और ऐसा प्रतीत होने लगा कि नेपाल शीतयुद्ध का क्षेत्र बन जायेगा। अपनी सुरक्षा की दृष्टि से भारत सरकार ऐसी स्थिति में नेपाल की राजनीति के प्रति उदासीन नहीं रह सकती थी। 15 मार्च 1950 को पं० नेहरू ने लोकसभा में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि “जहाँ तक कुछ एशियाई गतिविधियों का सम्बन्ध है भारत तथा नेपाल के बीच किसी प्रकार का सैन्य समझौता नहीं है, लेकिन नेपाल पर किये जाने वाले किसी भी आक्रमण को भारत सहन नहीं कर सकता। नेपाल पर कोई भी सम्भावित आक्रमण निश्चित रूप से भारतीय सुरक्षा के लिए खतरा होगा।”⁴

तिब्बत में चीन की गतिविधियाँ बढ़ने से नेपाल की सुरक्षा के विषय में भारत की चिन्ता बढ़ गयी और 17 मार्च 1950 को प्रधानमंत्री पं० नेहरू ने कहा कि, “नेपाल पर कोई भी सम्भावित आक्रमण निश्चित रूप से भारत की सम्प्रभुता के लिए खतरा होगा।” भारत सरकार के निमन्त्रण पर जनरल शमशेर तथा एस० एन० दीक्षित ने नेपाल सरकार के प्रतिनिधि के रूप में भारत की यात्रा की। भारतीय प्रतिनिधियों से उनकी लम्बी वार्ता हुई। इस वार्ता के परिणामस्वरूप 30 जुलाई, 1950 को दोनों के मध्य एक सन्धि हुई, परन्तु इसी बीच नेपाल में घटित घटनाओं के कारण भारत सरकार और नेपाल की राणा सरकार के सम्बन्धों में तनाव आ गया।

नेपाली कांग्रेस के नेतृत्व में राणाशाही से मुक्ति के लिए आन्दोलन शुरू हुआ। 6 नवम्बर, 1950 को नेपाल के महाराजा त्रिभुवन ने राज परिवार के 14 सदस्यों के साथ काठमाण्डू के राजभवन से निकलकर भरत में शरण ली। यह आन्दोलन भारतीय भू-भाग से संचालित किया गया। भारत के ही सहयोग से भारत में राणाशाही का अन्त हुआ, नेपाल के राजा वास्तविक शासक बने तथा नेपाल की भूमि पर लोकतन्त्र की स्थापना हुई और उस

समय पं० नेहरू ने कहा था कि, “नेपाल की स्वतन्त्रता का सम्मान करते हुए भी भारत नेपाल में कोई भी अव्यवस्था सहन नहीं कर सकता, क्योंकि इससे हमारी सीमा सुरक्षा कमजोर हो जाती है।”⁶

भारत के अथक प्रयास और संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की वकालत के फलस्वरूप नेपाल 1955 में संयुक्त राष्ट्रसंघ का सदस्य बना। 1 फरवरी, 1955 को नेपाली विदेशमंत्री ने अपने भाषण में कहा था कि नेपाल किसी भी परिस्थिति में भारत के विरुद्ध नहीं जायेगा। भारत ने नेपाल को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करने में बड़ी सहायता दी है और वह नेपाल का सबसे बड़ा मित्र है।⁷ पं० नेहरू ने भी लोकसभा में चर्चा के दौरान बोलते हुए कहा था कि “भारत का विचार नेपाल के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करना नहीं है, किन्तु नेपाल की घटनाओं का भारत पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अतएव भारत का नेपाल के विषय में चर्चा करना स्वाभाविक है।” अक्टूबर, 1956 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने काठमाण्डू में कहा था कि, “नेपाल की शान्ति एवं सुरक्षा के लिए कोई भी खतरा भारतीय शान्ति एवं सुरक्षा के लिए खतरा है। नेपाल के मित्र हमारे मित्र हैं और नेपाल के शत्रु हमारे शत्रु हैं।”⁸

भारत और नेपाल के बीच बढ़ते मधुर सम्बन्धों से चीन बौखला गया। सन् 1956 में नेपाली प्रधानमंत्री ने चीन की यात्रा की और 20 सितम्बर, 1956 को चीन नेपाल मैत्री सन्धि पर हस्ताक्षर हुए। जनवरी 1957 को चीन के तत्कालीन प्रीमियर चाउ एन. लाई नेपाल आये। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि नेपाल और चीन दोनों एक ही प्रजाति के हैं तथा नेपाल की स्वतंत्रता और सार्वभौमिकता को अक्षुण्ण बनाये रखने में यथाशक्ति सहायता देने का आश्वासन दिया। चीन ने नेपाल को 6 करोड़ की सहायता देने का भी वचन दिया। कोइराला मन्त्रिमण्डल को महाराजा ने भंग कर दिया और नेपाली कांग्रेस के कई नेता गिरफ्तार कर लिये गये। कुछ नेता भागकर भारत आ गये और यही से नेपाल नरेश के विरुद्ध आन्दोलन का संचालन करने लगे जिससे दोनों राष्ट्रों के सम्बन्धों में कटुता आ गयी जो 1961 तक बनी रही। नेपाल नरेश महाराजा महेन्द्र ने काठमाण्डू से ल्हासा तक सड़क मार्ग बनाने में चीन के साथ समझौता किया। जब चीन ने 1962 में भारत पर आक्रमण किया तब नेपाल ने तटस्थता की नीति अपनायी जिसे भारत ने पसन्द नहीं किया। यद्यपि नेपाल, भारत-चीन युद्ध में तटस्थ था, लेकिन चीन से वह सर्तक हो गया तत्कालीन गृहमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की नेपाल यात्रा से अनेक सन्देश दूर हो गये। शास्त्री जी के प्रयास से द्विपक्षीय वार्ताओं का दौर चला।

अक्टूबर, 1966 में भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की नेपाल यात्रा से भारत-नेपाल सम्बन्धों में एक नये युग का दौर शुरू हुआ। 1971 के भारत पाक युद्ध से भारत की विजय

का नेपाल पर बड़ा प्रभाव पड़ा। अब नेपाल यह समझ चुका था कि भारत एक निर्बल नहीं, सबल पड़ोसी है। जनवरी, 1972 में महाराजा महेन्द्र का निधन हो गया और महाराजा वीरेन्द्र विक्रम शाह देव गद्दी पर बैठे। महाराजा का व्यवहार भारत के प्रति उदारता का था। किन्तु 1975 में सिक्किम का जब भारत में विलय हुआ तो काठमाण्डू स्थित चीनी दूतावास द्वारा लाभ उठाकर भारत के विरुद्ध बुलेटिन निकाले गये और नेपाल सरकार चुप रही। चीनी दूतावास द्वारा भारत विरोधी प्रचार को बढ़ावा मिला, नेपाल के भारतीय स्वयं अपने को असुरक्षित महसूस करने लगे। भारत सरकार ने इस प्रकरण को गम्भीरतापूर्वक हल किया। भारत के कड़े रुख को देखकर नेपाल के महाराजा ने भारत के साथ मधुर कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने का आग्रह किया। अक्टूबर 1975 में महाराजा वीरेन्द्र भारत आये और इस प्रकार दोनों के बीच मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बने रहे। जनता पार्टी शासन के दौरान मार्च, 1978 में नेपाल के साथ व्यवहार और पारगमन के लिए अलग-अलग दो सन्धियाँ तथा अनाधिकृत व्यापार पर नियन्त्रण के लिए सहयोग के सम्बन्ध में अन्तर्सर्कारी समझौते के सम्पन्न होने से भारत एवं नेपाल के मध्य सद्भावपूर्ण वातावरण तैयार हुआ।

1980 के दशक के अन्तिम वर्षों में दोनों के बीच मतभेद बढ़ने लगे, स्थिति कई बार तो नाजुक स्तर पर पहुँच गयी। पूर्व में विवादास्पद शान्ति क्षेत्रों की घोषणा के अतिरिक्त चार बिन्दुओं पर मतभेद संघर्ष के स्तर तक पहुँच गये। ये बिन्दु थे-

1. नेपाल द्वारा शस्त्रों का आयात।
2. परमिट व्यवस्था लागू करना।
3. नागरिकता की समस्या।
4. व्यापार एवं पारगमन सन्धि पर विवाद।

1988 में महाराजा वीरेन्द्र ने भारी मात्रा में चीन से हथियार खरीदे जो जून 1988 में काठमाण्डू कोदारी मार्ग से होते हुए नेपाल पहुँचे। इन हथियारों की मात्रा 300-500 ट्रकों के बीच अनुमानित थी जिनमें राइफल आदि सम्मिलित थी। भारत ने नेपाल की इस खरीददारी को 1950 की सन्धि के विरुद्ध बताया तथा इन हथियारों के विरुद्ध प्रयोग होने के भय से नेपाल की भर्त्सना की।⁹

सार्क के अन्तर्गत दोनों देशों के मध्य सहयोग का द्विपक्षीय सम्बन्धों पर अच्छा प्रभाव पड़ा और द्विपक्षीय सम्बन्ध मजबूत होने से दोनों देशों की सुरक्षा निश्चित रूप से मजबूत हुई है। भारतीय सहायता से लाभाविन्त विभिन्न परियोजनाओं का कार्य निरन्तर चलता रहा। सन् 1988 के अन्तिम दिवसों में आयोजित सार्क सम्मेलन के जलपान कार्यक्रम में नेपाल महाराजा सम्मिलित नहीं हुए। सन् 1989 में भारत व नेपाल के मध्य व्यापार एवं पारगमन सन्धि समाप्त हो जाने से कटुता का वातावरण बना। उस

समय भारत नेपाल सम्बन्धों में उतार-चढ़ाव का मुख्य कारण भारत नेपाल सन्धि नहीं, अपितु राजनैतिक अधिक था।¹⁰

नेपाल के प्रधानमंत्री श्री कोइराला के 5-10 दिसम्बर 1991 तक के भारत दौरे से पूर्व दोनों पक्षों ने चार महीने तक सक्रिय रूप से और विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया। पहली बार भारत नेपाल उच्चस्तरीय कार्यदल बनाया गया जिसकी अध्यक्षता दोनों देशों के मंत्रिमण्डल सचिवों ने की। इसके बाद प्रधानमंत्री स्तर के विचार विमर्श के परिणामस्वरूप पारस्परिक लाभ के अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये और पाँच महत्वपूर्ण सन्धियों तथा समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। इनमें एक नई व्यापार सन्धि, एक नई पारगमन सन्धि, अप्राधिकृत व्यापार पर नियन्त्रण के लिए सहयोग का एक समझौता, नेपाल में ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण रोजगार को बढ़ावा देने के लिए एक समझौता, शासन एवं एक महान नेपाली राजभक्त एवं नेता की स्मृति में जी0 पी0 कोइराला फाउण्डेशन की स्थापना के लिए समझौते शामिल थे। जल संसाधन विकास के लिए सहयोग के सम्बन्ध में अनेक निर्णय लिये गये। व्यापार और पारगमन सन्धियों में काफी अधिक नई टैरिफ सुविधाओं का प्रावधान किया गया और इसकी कार्य अवधि को भी सरल बना दिया गया जिसका नेपाल द्वारा व्यापार एवं उद्योग द्वारा पूरा लाभ उठाने का प्रयास किया गया।¹¹

जी0 पी0 कोइराला के हटने के बाद नेपाल के सर्वप्रथम साम्यवादी प्रधानमंत्री मनमोहन अधिकारी हुए। उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री पी0 वी0 नरसिंहराव से कई बार मुलाकात की। अधिकारी के बाद, देउबा प्रधानमंत्री हुए। उन्होंने 1996 में भारत की यात्रा की और फरवरी 1996 में महाकाली परियोजना सन्धि पर दोनों देश के प्रधानमंत्रियों ने हस्ताक्षर किये। तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री इन्द्र कुमार गुजराल ने कहा कि, “भारत सदैव यह ध्यान रखेगा कि भारत एक बड़ा देश है और उसकी अर्थव्यवस्था भी बड़ी है। अतः नेपाल के आर्थिक विकास के प्रति उसका कर्तव्य भी बड़ा है। भारत नेपाल में कार्य करते हुए यह नहीं सोचता कि नेपाल उसके लिए क्या कर रहा है।”¹²

प्रधानमंत्री गुजराल ने अपनी पहली यात्रा नेपाल की ही की थी और महाकाली सन्धि के साथ-साथ नेपाल के आयात निर्यात सुगम बनाने के लिए उसे पारगमन अधिकार दिये गये। जिससे दोनों देशों के बीच सद्भावना का वातावरण बना तथा नेपाल का भारत विरोधी दृष्टिकोण भी बदला। नेपाल नरेश ज्ञानेन्द्र ने जून 2001 में अपने भाई राजा वीरेन्द्र और पूरे परिवार की हत्या के बाद बहुत ही सन्देहास्पद स्थिति में नेपाल की राजगद्दी सम्भाली। नरेश बनने के बाद ज्ञानेन्द्र ने संसदीय लोकतंत्र को अमर्यादित ढंग से नुकसान पहुँचाने, संसद भंग करने, अपनी मर्जी से मंत्रियों को नियुक्त एवं बर्खास्त करने का कार्य किया। यह सब

तब किया जा रहा था, जब नेपाल में माओवाद चरम पर था। 1 फरवरी, 2005 को नेपाल नरेश ने आपातकाल लागू कर दिया और पूर्ण राजशाही लागू कर दी। भारत लोकतंत्र विरोधी के साथ मंच साझा नहीं करना चाहता था। इसलिए भारत द्वारा नेपाल को दी रही सैन्य सहायता को भी बन्द कर दिया गया। अप्रैल 2005 में जकार्ता में अफ्रोएशियाई देशों के सम्मेलन में नेपाल नरेश की प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से भेंट में भारत ने नेपाल से लोकतान्त्रिक प्रक्रिया लागू करने पर जोर दिया। नेपाल को सैन्य सहायता का फैसला भी इसलिए किया गया कि सैन्य मदद रोकने से माओवादियों पर नियन्त्रण में परेशानी हो रही है। राजा ज्ञानेन्द्र का केन्द्र की सत्ता में बने रहने की इच्छा का ही परिणाम है कि राजनैतिक दल व माओवादी एक मंच पर आ गये। नेपाल में लोकतन्त्र बहाली के लिए बढ़ते अन्तर्राष्ट्रीय दबाव और राजशाही विरोधी प्रबल जन भावनाओं के आगे झुकते हुए राजा ज्ञानेन्द्र ने 24 अप्रैल 2006 की पुरानी संसद को बहाल किये जाने की घोषणा की।

प्रधानमंत्री बनने के बाद 6-9 जून, 2006 को भारत यात्रा पर आये गिरिजा प्रसाद कोइराला से प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने नेपाल को बदहाली से उबारने के लिए मदद की पेशकश की। नेपाल को दिये जाने वाले पैकेट में निम्न चीजें शामिल थी-

1. नेपाल सरकार की मदद के लिए एक मुश्त 100 करोड़ रुपये
2. ढांचागत विकास के लिए 100 करोड़ डालर।
3. नेपाल को दिया जाने वाला अनुदान 65 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 150 करोड़ रुपये सालाना।
4. नेपाल को 2500 टन खाद।
6. नेपाल से आयात होने वाले सामानों पर सीमा शुल्क छूट।

नेपाल में 11 वर्षों से चला आ रहा माओवादियों द्वारा सशस्त्र संघर्ष 21 नवम्बर, 2006 को समाप्त हो गया। 7 राजनैतिक दलों की अन्तरिम सरकार के साथ माओवादियों ने समग्र शान्ति समझौतों पर हस्ताक्षर कर दिये। माओवादियों के सशस्त्र आन्दोलन के चलते हिंसक घटनाओं में हजारों लोग मारे जा चुके हैं।

नेपाल में विगत 40 वर्षों से चली आ रही राजशाही 28 मई 2008 को समाप्त हो गयी। नवनिर्मित संविधान सभा ने देश को धर्म निरपेक्ष संघीय लोकतान्त्रिक गणराज्य घोषित किया।

नेपाल के साथ रिश्तों के नये आयाम देने और द्विपक्षीय सम्बन्धों के नये अध्याय की शुरुआत के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 3 अगस्त 2014 को नेपाल की राजधानी काठमाण्डू पहुंचे। नेपाल के प्रधानमंत्री सुशील कोइराला ने उपप्रधानमंत्री बामदेव गौतम और प्रकशमान सिंह के साथ उनका स्वागत किया। नेपाली सेना ने भारतीय प्रधानमंत्री को 19 तोपों की सलामी देकर रिश्तों में मधुर मुस्कान का संकेत दिया। नेपाल के नागरिक भी सड़कों

पर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज लेकर भारतीय प्रधानमंत्री का स्वागत कर रहे थे। 17 साल बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री का यह नेपाल दौरा था।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस अवसर पर 10000 करोड़ नेपाली रुपये की रियायती कर्ज उपलब्ध कराने की घोषणा की और पनबिजली की अपार सम्भावनाओं वाले चौतरफा जमीनी सीमाओं से घिरे इस देश के विकास के लिए हिट (HIT) फार्मूले का प्रस्ताव रखा। संविधान सभा को सम्बोधित करते हुए मोदी ने कहा कि यह राशि भारत द्वारा नेपाल को पहले दी गई सहायता से अलग होगी। नरेन्द्र मोदी ने जब HIT का उल्लेख किया तो उपस्थित सांसदों ने उनकी बात का स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी ने H-Highways, I- Information ways और T- Transmission ways से सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत जल्द से जल्द यह तोहफा प्रदान चाहता है। इसके पहले भारत ने भारतीय आयात-निर्यात बैंक के जरिये नेपाल को 25 करोड़ डालर की कर्ज सुविधा प्रदान की थी। नेपाल के विदेश मंत्रालय के अनुसार, यहां की प्राथमिकताओं के अनुसार, नये अनुदान का उपयोग बुनियादी ढाँचे के विकास और ऊर्जा परियोजना के लिए किया जायेगा।

नेपाल के माओवादी नेताओं ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ हुई उनकी मुलाकात को बेहद लाभप्रद बताया। माओवादी नेता पुष्प कमल दहल प्रचण्ड ने मोदी से मुलाकात के बाद मीडिया से कहा 'भारत और नेपाल के बीच नये अध्याय की शुरुआत हुई है। हमारी बातचीत बेहद लाभदायक और ऐतिहासिक रही। मोदी ने शान्ति प्रक्रिया का समर्थन किया है।¹³ प्रचण्ड ने ये भी कहा कि मोदी का रुख इस बात को लेकर स्पष्ट है कि पहले राजनीतिक स्थिरता आनी चाहिए फिर आर्थिक सहयोग होना चाहिए। पूर्व प्रधानमंत्री बाबू राम भट्टराई ने कहा कि हम बातचीत से बेहद संतुष्ट हैं। अपनी दो दिन की ऐतिहासिक यात्रा की समाप्ति पर भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस हिमालयी देश के लिए स-सहयोग, सम्पर्क, संस्कृति, संविधान पर ध्यान देते हुए कुछ कदमों की घोषणा की। प्रधानमंत्री ने कहा कि 1950 की सन्धि के किसी भी पक्ष की समीक्षा का वायदा करता हूँ जो यहां चिन्ता पैदा करता हो। उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण सड़कों का निर्माण करने, ऊर्जा सुरक्षा में सहयोग और छात्रवृत्तियों की संख्या 180 से 250 करने में तेजी से सहयोग करने की घोषणा की। यात्रा के सम्बन्ध में विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता सैय्यद अकबरुद्दीन ने पत्रकारों को बताया कि 'कल शाम संविधान सभा में प्रधानमंत्री के भाषण ने नेपाल की जनता के दिल व दिमाग को छुआ है एक दशक तक सशस्त्र आन्दोलन चलाने वाले प्रचण्ड ने इस यात्रा को ऐतिहासिक यात्रा बताते हुए यह आशा व्यक्त की, कि यह मुलाकात रिश्तों के नये युग में ले जायेगी। 1950 की भारत-नेपाल

मित्रता सन्धि की समीक्षा की मांगों के सम्बन्ध में अकबरुद्दीन के मुताबिक प्रधानमंत्री, सन्धि के ऐसे किसी भी पक्ष की समीक्षा के लिए तैयार हैं जिसकी जरूरत हो और उन्होंने यह कहा है कि हम ऐसे किसी भी सुझाव का इन्तजार करेंगे जो नेपाल देना चाहता है, विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता के अनुसार प्रधानमंत्री भारत व नेपाल जैसे मित्रों के लिए हर मुद्दे पर बात करना चाहते हैं।

18वें दक्षेस शिखर सम्मेलन में पहुंचे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नेपाल आर्मी पवेलियन में एक विशेष समोराह में नेपाली प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री सुशील कोइराला को ए0एल0एच0 मार्क-3 ध्रुव हेलीकॉप्टर सौंपा। मोदी ने कहा, यह नेपाल के रक्षा कवच में शामिल होगा। भारत सरकार ने द्विपक्षीय परामर्श समूह बैठक के तहत हुए समझौतों के अनुसार, हिन्दुस्तान एरोनाटिक्स लिमिटेड के द्वारा बने इस हेलीकॉप्टर को सौंपा है। यह हेलीकॉप्टर मूल ध्रुव हेलीकॉप्टर का आधुनिक संस्करण है और शक्ति इंजनों से युक्त है। 14 यात्रियों की क्षमता वाले इस हेलीकॉप्टर का प्रयोग भारतीय सेना 2012 से कर रही है। इसकी लागत 60-80 करोड़ रुपये के बीच अनुमानित हैं। नेपाली सेना ने एक बयान में कहा कि भारत-नेपाल को सैन्य प्रशिक्षण और भौतिक उपकरण प्रदान कर रहा है। भेंट किया गया हेलीकॉप्टर निश्चित रूप से नेपाली सेना के मानवीय सहायता कार्यक्रमों और प्राकृतिक आपदा कार्यक्रम को मजबूत करेगा।

भारत-नेपाल सुरक्षा सम्बन्धों के निष्कर्ष पर हम यह पाते हैं कि नेपाल भारत के संदर्भ में जूनियर भागीदार के मनोविज्ञान से ग्रसित है तथा दक्षिण के पड़ोसी के अधिपत्य की आशंका का भूत उसे भयभीत करता रहा है। नेपाल, भारत और चीन के साथ 'समदूरी सिद्धान्त' पर सम्बन्ध विकसित करना चाहता है। वह चीन को नाराज भी नहीं करना चाहता, बल्कि उसकी संतुष्टि का ध्यान रखता है, परन्तु भारत समदूरी सिद्धान्त नहीं चाहता है। वह तो नेपाल के साथ अपनेपन का सम्बन्ध चाहता है, क्योंकि दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक एवं धार्मिक भावनाएं जुड़ी हैं। वर्तमान समय में नेपाल के साथ 1950 में की गयी सन्धि भारत नेपाल सम्बन्धों में असहमति का एकमात्र मुद्दा है। सन्धि के एक बात यह कही गयी है कि नेपाल यदि हथियारों का कोई आयात करेगा तो भारत को सूचित करेगा। मूलतः यह शर्त इसलिए है कि नेपाल को हथियारों की आवश्यकता की पूर्ति भारत से ही की जा सके और उसे अपनी विदेशी मुद्रा इस पर खर्च न करनी पड़े, लेकिन इस बात को जिस रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है कि ऐसा लगता है जैसे नेपाल के कहीं से भी हथियार आयात करने के सम्प्रभु अधिकार का हनन है। यह भी कहा जाता है कि 1950 की स्थितियों और आज की परिस्थितियों में अन्तर हैं आज बहुत कुछ बदल चुका है, नेपाल में भी और भारत में भी।

अगस्त एवं नवम्बर 2014 को भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की नेपाल यात्रा के दौरान वहां के प्रधानमंत्री श्री सुशील कोइराला एवं पुष्प कमल दहल प्रचण्ड सहित अन्य नेताओं के साथ हुई वार्ता से वहां के नेताओं, अधिकारियों और जनता के बीच काफी उत्साह है। प्रधानमंत्री की यात्रा पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता द्वारा दिये गये बयान में भी इस बात का उल्लेख है कि भारत 1950 के उस सन्धि के विवादित मुद्दों पर नये सिरे से वार्ता हेतु तैयार है। इस यात्रा में प्रधानमंत्री ने नेपाल सेना को भारत निर्मित हेलीकॉप्टर, चिकित्सीय सुविधा हेतु 200 बिस्तरों का ट्रामासेन्टर, 1000 करोड़ नेपाली रूपयों की आर्थिक सहायता एवं जन सुविधा के लिए दिल्ली-बनारस-काठमाण्डू- पोखरा के बीच अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण बस संचालन का भी उद्घाटन किया।

आधुनिक युग में हम यह कह सकते हैं कि इससे भारत और नेपाल के बीच सुरक्षा सम्बन्धों को एक मजबूती मिलेगी और दोनों देश एक अच्छे पड़ोसी के रूप में अपना अपना विकास करेंगे।

संदर्भ:-

1. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, डॉ0 बी0एल0फाड़िया, साहित्य भवन, पब्लिकेशन, आगरा, पन्द्रहवां संशोधित संस्करण, 2012 पृ0 306.
2. भारत की विदेश नीति, बी0एन0खन्ना, लिपाक्षी अरोड़ा, विकास पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 2008 पृ0 189.
3. भारत की विदेश नीति, डॉ0 बी0पी0गैतम, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2002, पृ0 138.
4. भारत की विदेश नीति, बी0पी0 दत्ता, विकास पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ0 251-52.
5. वही, पृ0 140.
6. वही,
7. वही
8. वही पृ0 142
9. रमेश ठाकुर, दि0 पालिटिक्स, एण्ड इकोनॉमिक्स, ऑफ इण्डियन फारेन, पालिसी नई दिल्ली, 1994, पृ0 195.
10. Oppcited-3, पृ0 147.
11. टाइम्स ऑफ इण्डिया, 27 नवम्बर, 1997.
12. वही, 3 पृ0 149
13. <http://khabar.ndtv.com: Indo-Asian news.service>.

